कामकाजी छोटी आयु के बच्चों की शुरूआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन - (एक विवरण)

शुभांगी तावरे, शिक्षिका, कमला निंबकर बालभवन, फलटण

सर रतन टाटा ट्रस्ट के सहयोग से फलटण जिला सातारा में सी. एल. एल. सी. (सेंटर फॉल लेंग्वेज लिटरेसी ऐंड कम्युनिकेशन) की स्थापना कमला निंबकर बालभवन में हुई। सी. एल. एल. सी. का उद्देश है भाषा विकास के लिए काम करना जिसके तहत टीचर फॅलोशिप की घोषणा हुई। इसके लिए महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली इ. राज्यों से शैक्षणिक क्षेत्र में भाषा या अन्य विषयों पर कर रहे कार्य का चयनकत्ताओं ने ब्यौरो दिया। ये फेलोशिप स्थानिय स्तर पर भाषा के विकासात्मक पहलू पर कार्य करने के लिए दी गई।

इस परियोजना के लिए राजस्थान के पुखराज व नंदलाल माली का चयन किया गया जो कि राजस्थान के तिलोनिया गाँव की रात्रिशालाओं में साक्षरता परियोजना इ एल पी के समन्वयक के रुप में कार्य करते है। इन दोनों शोधकर्ताओं ने 'कामकाजी छोटी आयु के बच्चों की शुरुआती पठन व लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन' और 'कामकाजी बडी आयु के बच्चों की शुरुआती पठन लेखन की प्रक्रिया का अध्ययन' किया। अध्ययन के दौरान शिक्षा संबंधी आयी समस्याओं और चुनौतियों को गहनता से हल करने के लिए ई. एल. पी. पध्दती क्रियान्वित की इस प्रकार पिछडे, गरीब, कामकाजी बच्चों में पढने-लिखने के प्रति रुचि, आत्मविश्वास विकसित किया साथही समझ के साथ पढने-लिखने की क्षमता का विकास करने में मदद मिली।

पृष्ठभूमि –

ई. एल. पी. यानी प्रारम्भिक साक्षरता परियोजना ने राजस्थान में रात्रिशालाओं के साथ कार्य एस डब्ल्यू आर सी. तिलोनिया की साझेदारी के साथ किया। ई. एल. पी. की विधियों को इन रात्रिशालाओं में इस सोच से लागू किया गया कि इन्हें स्थानीय परिवेश के अनुकूल बनाया जाए। फिल्ड विजिट, रात्रिशालाओं के बच्चों का मॉनीटर किया गया। ई. एल. पी. द्वारा बनाए गए विशेष मूल्यांकन एवं अंकीकरण प्रपत्रों द्वारा बच्चों के शैक्षणिक स्तर की प्रगति पर निरन्तर दृष्टि रखी गई। ई. एल. पी. की सामग्री को कक्षा के अनुभव लेकर एवं समयबद्ध कार्य योजना बनाकर लागू किया गया है। क्रियान्वयन के समय कोशिश यह रहती है कि उस समाज के परिवेश व ढाँचे की समझ को गहरा किया जाए, जिसका असर बच्चों के सीखने पर होता है। यहाँ पढनेवाले बच्चें गरीब व पिछडे वर्गो से थे। ये बच्चें बहुत-छोटी उम्र से अपने परिवार के साथ दैनिक जीवन के संघर्ष व जिम्मेदारियों जैसे दिनभर पशुओं को चराना, खेत का या घर का काम इ. में बिताते है।

इस शोध के पीछे समन्वयकों की सोच थी कि बच्चों में शिक्षा के प्रति आत्मविश्वास कैसे जगाएँ?शिक्षा के महत्व को देखते हुए यह जरुरी है ताकि ये निर्भिक और निडर होकर अपनी दिनचर्या पूरी कर सकें। बच्चें शिक्षित होंगे तो वे नवाचार करने का प्रयास करते है। वे नई जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक होते है। इन सबके लिए बच्चों का अक्षर ज्ञान और समझ से पढना जरूरी है ना कि यांत्रिक रूप से।

सी. एल. एल. सी. के टीचर फैलोशिप के तहत ई. एल. पी. के समन्वयक पुखराज माली ने एस. डब्ल्यू. आर. सी. की रात्रिशालाओं में यह अध्ययन कार्य किया। जिसके द्वारा बच्चों की शुरुआती पठन-लेखन की क्रियाएँ और उनसे जुडी विशेषताओं को पहचानने का प्रयास किया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय – अजमेर जिले की किशनगढ के रामपुरा में संचालित रात्रिशाला में पढनेवाले बच्चों का अध्ययन किया गया। यह गाँव पिछडे क्षेत्र में स्थित है जहाँ आने-जाने के साधन नही है। कामधंधे के लिए यहाँ के लोग जब दूसरे राज्य में जातें है, तो बच्चों को भी दो-तीन महीने साथ ले जाते है।

शोधकार्य के उद्देश्य –

१. कामकाजी अनामांकित बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था से जोडकर उनमें शुरुआती पठन व लेखन की समझ विकसित करने की प्रक्रिया को करीब से समझना।

२. पढने-लिखने की समझ व गति को समझना।

३. पढने-लिखने की प्रक्रिया में रुकावटों को करीबी से समझना इन रुकावटों को दूर करने का प्रयास कर सहयोगी तथ्यों को पहचानना।

४. बच्चों में पढने-लिखने की जिज्ञासा को समझकर सरल तरीकों का उपयोग करना।

५. इस शोधकार्य की सीख को अपनी कक्षाओं में पढाने के तौर-तरीकों में शामिल करना।

शोधकार्य के लिए चुने हुए बच्चों की आयु ५ से ९ वर्ष तक थी। इनका सारा दिन जानवरों को चराने या काम में जाता था। शाम को बच्चें थकेहारे लौटते और रात्रिशाला में पढने आते थे शुरू में ये पेंसिल, बरता पकडना भी नही जानते थे।

अध्ययन प्रक्रिया

१. शुरूआती मूल्यांकन

२. हर बच्चों का कक्षा के भीतर सप्ताह में एक बार अवलोकन करके डायरी में लिखना।

३. समय-समय पर लिखित कार्य या वर्कशीट।

४. ६ महीने के दौरान अवलोकन के नोट्स व बच्चों के कार्य को सामने रखकर हर बच्चें की विस्तृत रिपोर्ट पर प्रगति का निष्कर्ष निकालना।

५. प्रत्येक बच्चें के घर जाकर कैस स्टडी लिखना।

शिक्षण के तरीकों का संक्षिप्त वर्णन –

कक्षा १ में वर्ण समूह विधि से हिंदी पढने-लिखने का कार्य शुरू किया गया। इस विधि के तहत हिंदी वर्णमाला को ६ समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक वर्ण समूह में कुछ चयनित स्वर, व्यंजन और मात्राओं को लिया। बच्चों को इन वर्ण समूहों से एक-एक करके क्रमबद्ध तरीकों से परिचित कराया जाता था। प्रत्येक वर्ण समूह के वर्ण, अक्षर और मात्राओं से बच्चों को एक-साथ में ही कई गतिविधियों द् वारा परिचित कराया जाता ताकि शुरु से ही बच्चें वर्ण और अक्षरों को अर्थपूर्ण शब्दों के हिस्सों की तरह देखे। जल्द ही बच्चें वर्ण समूह में शामिल अक्षरों की ध्वनियों को अपने मन में जोडकर अपने मौखिक शब्दों के लिए लिखित शब्द बनाना सीखे फिर वे अपने हर लिखित शब्द का अर्थ चित्र बनाकर दर्शाते थे। बच्चों को शब्द जोडकर वाक्य बनाना और कविता का पठन और लेखन भी सिखाया जाता था।

रिसर्च के बच्चों का वर्तमान में पठन-लेखन का स्तर –

शोधकर्ता ने पाया कि कुछ बच्चों में बुनियादी मोड क, प, म, ल, न की पकड थी वर्णो की ध्वनि की पहचान नही थी जैसे कभी क को प पढा जाता था ध्वनि द्वारा चिह्न की पहचान कभी थी तो कभी भूला दी जाती थी।

शोधकर्ता ने ये आगे बढे इस हेतु अक्षर दौड, फ्लैश कार्ड द्वारा अक्षर की पहचान का अभ्यास कराया ताकि चिह् न व ध्वनि के माध्यम से वर्णो की पहचान हो पाए।

कुछ बच्चें वर्ण। अक्षर व ध्वनि की पहचान और ध्वनि द्वारा चिह् न की पहचान समझ से कर लेते थे। वे दो ध्वनियों को जोडकर अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण कर लेते थे। शब्द के अर्थ को दर्शाने के लिए चित्र बना लेते थे। कविता का उच्चारण, पठन शब्दों की पहचान व फ्लैश कार्ड द्वारा कविता के वाक्य का निर्माण करते और छोटे-छोटे वाक्यों का श्रुतलेखन उदाहरणार्थ – नानी आम लाई। यह लिखने लगे व पढने भी। इससे यह साबित होता है कि इनके पठन और लेखन से संबंध हो गया है। अब इन्हें वर्ण समूह - २ के वर्णो का अभ्यास कराकर ध्वनि व चिह्न की पहचान कराई शब्दों की प्रथम ध्वनि और चिह्न पहचानने के लिए इन बच्चों को वर्कशीट देकर शब्द बोले जैसे चरी, रकम, सडक, तगारी आदि। आगे बच्चों को शब्द की प्रथम ध्वनि और चिह्न की पहचान करके प्रथम अक्षर पर गोल लगाना था। बच्चों ने प्रथम ध्वनि पर गोला लगाया, गोला लगाए वर्णो को सही भी लिखा। धीरे-धीरे समझ के साथ वे लिखने लगे फिर अक्षरों का अभ्यास किया।

बच्चों के शिक्षण कार्य की प्रगति अक्टूबर से मार्च तक – (एक-दो उदाहरण)

नाम मुकेश	माह अक्टूबर वर्ण/अक्षर की पहचान	नवंबर से जन क, प, म की पहचान	फरवरी वर्ण समूह १ के वर्णो का बुनियादी मोड सीखा	मार्च ध्वनि द्वारा चिह्न की पहचान तथा श्रुतलेखन लिख लेता है।

अनिता के शिक्षण कार्य में प्रगति अक्टूबर से मार्च तक –

माह अक्टूबर	नवंबर से जन	फरवरी	मार्च
वर्ण समूह १ के कुछ वर्ण पहचानती है	शब्द के शुरवाती ध्वनि की पहचान बनी। वर्ण, अक्षरों का श्रुतलेखन समझ से लिखती है।	वर्ण समूह-१ के अक्षरों से अर्थपूर्ण शब्द व चित्र बना लेती है. । फ्लैश कार्ड से वाक्य का निर्माण, पठन व लेखन करती है।	अक्षर चार्ट से अक्षरो को मिलाकर शब्द बनाती है व वर्ण समूह १ की कविताओं का पठन-लेखन कर लेती है।

अनिता के कार्य की व्यक्तिगत प्रगति रिपोर्ट

(अक्टूबर से मार्च की प्रगति)

अनिता में पढने-लिखने की समझ को परखने के लिए शुरुआती मूल्यांकन लिया गया जिसमें अनिता ने अपनी कल्पना से अपनी दुनिया से जुडे हुए चित्र बनाए जैसे कागला, फूल, पत्ता, छोरा उसे वर्ण अक्षर का श्रुतलेखन भी लिखवाया गया। ध्वनि द्वारा चिह्न की पहचान हेतु शब्द बोले गए। वर्ण समूह - १ के वर्णो की ध्वनि व अक्षर की प्रथम ध्वनि पर गोला लगाना व उसे लिखना।

अनिता को वर्ण/अक्षर के श्रुतलेख लिखने की समझ तो थी परंतु ध्वनि द्वारा चिह्न की पहचान की समझ नही थी।

वर्ण क, प, ल पर शब्द सुनकर गोला तो लगाया लेकिन समझ से लिख नही पाई। व क को प पढती है। उसकी इस समस्या को दूर करने हेतु क प म ल न वर्ण के बुनियादी मोड का अभ्यास उसके साथ शुरू किया गया। बोर्ड पर कविता द्वारा हवा में वर्ण पर अंगूली घूमाना और जमीन पर क प म ल न के बुनियादी मोड का अभ्यास करवाया गया।

प्रथम ध्वनि की पहचान हेतु क प म ल न से शुरू होनेवाली चीजों के नाम पूछे गए। जो घर में होती है। अनिता ने क से शुरू होनेवाले शब्द बतलाए – केलडी, काचरो, कागलो म से मतीरो, मटको, न से नल, नाडो इस के अलावा गतिविधी द्वारा भी ध्वनि की पहचान कराई गई – जैसे रेल-रेल-रेल बोर्ड पर रेल लगाई गई। अनिता के पेपर पर रेल बनाई और क, प, म, ल, न से शुरू होनेवाले शब्दों के चित्र रेल में बनाए गए। कणकती, काचरो, काकडी, पीपों और पपीतों आदि।

चित्र पठन करवाया गया।

माह नवंबर से जनवरी –

वर्ण समूह – १ के वर्णो व अक्षरों की ध्वनि व चिह्न की पहचान। वर्ण/अक्षर शब्दों के श्रुतलेख का अभ्यास जारी रखा गया।

प्रथम ध्वनि की पहचान करवाकर अक्षर चार्ट में चिह्न की पहचान करवाई गई। अनिता ध्वनि व चिह्न में तालमेल समझ से करने लगी।

अ, आ, ई के बुनियादी मोड सीखी।

एक माह बाद क, प, म, ल, न, अ, आ, ई का श्रुत लेख समझ से लिखने लगी।

गतिविधी द्वारा वर्ण/अक्षर की पहचान कर लेती है।

अक्षर चार्ट से दो ध्वनियों को जोडना अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण करना एवं निर्माण किए गए शब्द का चित्र भी समझ से बना लेती है।

शब्द को इकाई की तरह पढती है।

माह फरवरी –

शुरू में अक्षर चार्ट से शब्द खोज का अभ्यास कराया गया।

शब्द खोजकर उन्हें लिखा जैसे नल, नानी, मामी, कान फिर उनके चित्र भी बनवाए।

शब्द सुनकर उसके लिखित रूप पर गोला लगाने का अभ्यास करवाया गया।

वर्ण, अक्षर के श्रुतलेख लिखने लगी।

शब्द पहचानकर जोडियों को लाईन खींचकर जोडने की वर्कशीट दी सही करने लगी।

छोटे-छोटे वाक्य बनाने का व लिखने का अच्छा प्रयास करने लगी जैसे मामी काली माला लाई।

माह मार्च

शुरू में शब्द खोज की वर्कशीट ली गई। अनिता ने अक्षर चार्ट से शब्द खोजे जैसे - काकी, पानी, नीली, साथ में उनके चित्र भी बनाए।

शब्द वाक्य का श्रुतलेख लिखा।

वह फ्लैश कार्ड द्वारा कविता के वाक्य का निर्माण कर लेती है। जैसे - नानी आम लाई। कमला नल का पानी ला। वाक्यों का पठन धाराप्रवाह रूप से कर लेती है।

मूल्यांकन के साथ ही बच्चों की केस स्टडी भी लिखी जाती। उदाहरणार्थ – इंदिरा और अनिता की पक्की दोस्ती है। अनिता इंदिरा अपना ज्यादातर समय साथ-साथ बिताती है। दोनों की दादीयाँ भी गहरी दोस्त है। अनिता के पिता हनुमान लडकी को पढाने के पक्ष में नही है इसका मुख्य कारण गरीबी और पुरानी सोच। वे मार्बल एरिया में काम करने जाते है माँ खेती में काम करती है इसलिए अनिता को भैस चराने भेज देते है। माँ-पिता कडी मजदूरी के कारण थक जाते है इसलिए बच्चों की तरफ ध्यान नही देते। अनिता घर के अन्य कामों में भी हाथ बटाती थी। आजकल अनिता रात्रिशाला में नियमित आ रही है और आत्मविश्वास से पढ रही है ताकि अपने मन का ताना-बाना बुन सके, अपनी दुनिया को थोडा बडा कर सके।

यहाँ आने वाले इस तरह के सभी बच्चों को रात्रिशाला सही मायने में सहारा दे रही है साक्षर कर रही है। इन बच्चों में अधिकांश बच्चे बागरिया जाति के है। स्वर्णजाति समाज में बागरिया जाति को नीची जाति का माना जाता है वे उन्हें हासिये पर ही देखना चाहते है।

समन्वयकजी ने जब रात्रिशाला अध्यापिका से बच्चों की पढने-लिखने की प्रगति के बारें में विचार पूछे तो उनका कहना था कि इन बच्चों को घरवाले पहले पाठशाला नही भेज रहे थे उनकेघर वालों को समझाया बातचीत जारी रखी। अनिता के मामले में भी घरवालों से कहा कि उसे पढने भेजो ताकि कम-से-कम वह दूध का छोटा-मोटा हिसाब कर सके। तब जाकर अनिता को भेजा। इस तरह की अनेक समस्याओं को हल करना पडता है।

वर्ण समूह पद्धति से बच्चों में कई बदलाव आए जैसे-पहले क, का, की यह पढाते थे तो बच्चों के समझ नही आता था। इस पद्धति से बच्चों में आसानी से वर्ण की पहचान हुई। शब्द बनाकर चित्र भी आसानी से समझ के साथ बनाने लगे। बच्चों में समझ के साथ लिखने-पढने का बदलाव आया। यहाँ शब्दों की पकड जल्दी होती है क्योंकि एक वर्ण का अभ्यास करना फिर शब्द बनाना यह आसान व अच्छा तरीका है। वर्ण समूह-१ सीखने पर फिर वर्ण समूह-२ के वर्ण च, र, स, त, ग का अभ्यास होता है इसमें बच्चा ध्वनि और चिह्न ही पहचान ठोस करता है। पहले बच्चें रटते थे पर अब नही।

अतः ई. एल. पी. पद्धति सरल, रोचक है, जो परिवेश से जुडी हुई है इस कारण बच्चों की नींव मजबूत होती है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि शिक्षा में बच्चों के परिवेश के शब्द तथा उनकी भाषा को कक्षा मे महत्त्व दिया जाए तो बच्चें सरलता से पठन-लेखन से अपना संबंध बनाते है। बच्चें अपनी कल्पना से जो चित्र बनाते है उनको महत्त्व देने से बच्चा अधिक सक्रिय और क्रियाशील होता है। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए एक बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों की सामाजिक परिस्थितियों को समझना बहुत जरूरी है साथ ही उनके तनावपूर्ण स्थिति के प्रति संवेदनशील होकर ही उन्हें शिक्षा से जोडा जा सकता है।